

श्री हित मंगल गान



श्री हित प्रताप चंद्र गोस्वामी जी महाराज

श्री हित मन मोहन गोस्वामी जी महाराज

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज

!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मंडना ।
रसिकअन्यनि मुख्य गुरु, जन भय खंडना ॥
श्रीवृन्दावन वास, रास रस भूमि जहां ।
क्रीडत श्यामा-श्याम, पुलिन मँजुल तहां ॥
पुलिन मँजुल परम पावन, त्रिविध तहां मारुत बहे ।
कुंज भवन विचित्र शोभा, मदन नित सेवत रहे ॥
तहां संतत व्यासनंदन, रहत कलुष विहंडना ।
जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मंडना ॥1॥

जै जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उदित सदा ।
द्विज-कुल-कुमुद प्रकाश, विपुल सुख संपदा ॥
पर उपकार विचार, सुमति जग विस्तरी ।
करुणा-सिंधु कृपालु, काल भय सब हरि ॥
हरि सब कलि काल की भय, कृपा रूप जु वपु धर्यौ ।
करत जे अनसहन निन्दक, तिनहुँ पै अनुग्रह करयौ ॥
निरभिमान निर्वैर निरुपम, निष्कलंक जु सर्वदा ।
जै जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उदित सदा ॥2॥



श्रीहित निमिष मोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन
www.shriradhavallabh1.com



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

जै जै श्रीहरिवंश, प्रशशित सब दुनी ।
सारासार विवेकित, कोविद बहु गुनि ॥
गुप्त रीति आचरन, प्रगट सब जग दिये ।
ज्ञान-धर्म-व्रत-कर्म, भक्ति-किंकर कीये ॥
भक्ति हित जे शरण आये, छुंद दोष जु सब घटे ।
कमल कर जिन अभय देने, कर्म-बंधन सब कटे ॥
परम सुखद सुशील सुंदर, पाहि स्वामिनि मम धनी ।
जै जै श्रीहरिवंश, प्रशशित सब दुनी ॥३॥

जै जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइ है ।
प्रेम लक्षणा भक्ति, सुद्रढ करि पाइहै ॥
अरु बाढे रसरीति, प्रीति चित न टरे ।
जीति विषम संसार, कीरति जग विस्तरै ॥
विस्तरै सब जग विमल कीरति, साधु-संगति न टरै ।
वास वृन्दाविपिन पावै, श्रीराधिका जु कृपा करै ॥
चतुर जुगल किशोर सेवक, दिन प्रसादहि पाइ है ।
जै जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइहै ॥४॥

-- रसिक भूषण संत श्रीहित सेवक जी महाराज कृत --



श्रीहित निमिष मोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन
www.shriradhavallabhilal.com



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

|| बधाई गान ||

मधुरीतु माधव मास सुहाई |

भाग प्रकाश व्यास नन्दन मुख , फूल्यौ कमल अमल छबि छाई ||
श्रवत मधुर मकरंद सुयश निज , कुंज-केलि-सौरभ सरसाई |
सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन , 'कृष्णदास' सुख सार सदाई ||

|| गुरु वंदना ||

नमो नमो जय श्रीहरिवंश |

रसिक अनन्य वेणु कुल मंडन, लीला मान सरोवर हंस ||
नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी, रास विलास प्रशंस ||
आगम-निगम अगोचर राधे, चरण सरोज व्यास अवतंश ||

-- रसिकवर श्री हरिराम व्यासजी कृत --

|| श्री सेवकचरण वंदना ||

प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाउ,

करहु कृपा श्री दामोदर मोपै, श्रीहरिवंश चरण रति पाउ ||
गुण गंभीर श्री व्यासनंदनजू के, तुव परसाद सुजस रस गाउ |
नागरीदास के तुमही सहायक, रसिक अनन्य नृपति मन भाउं ||

-- रसिकवर श्री नागरीदास जी कृत --



श्रीहित निमिष मोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन
www.shriradhavallabhla.com

